Engineering Universe for Scientific Research and Management
ISSN (Online): 2319-3069
Vol. XVI Issue XII
December 2024

छत्तीसगढ़ जिलों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विषय चयन में शिक्षक और माता–पिता की मार्गदर्शक भूमिका

उमा चौधरी, डॉ. जे.एस. भारद्वाज
पी.एचडी. शोधार्थी), चौधरी चरण सिंह, विश्वविद्यालय मेरठ, उ.प्र.
गाईड, (शिक्षा विभाग), चौधरी चरण सिंह, विश्वविद्यालय मेरठ, उ.प्र.

सारांश

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के विषय चयन में शिक्षक और माता–पिता की भूमिका की विवेचना करता है। विषय चयन विद्यार्थियों के शैक्षिक भविष्य के लिए महत्वपूर्ण निर्णय होता है, जो उनके करियर और भविष्य के अवसरों को प्रभावित करता है। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षक और माता–पिता किस प्रकार से विद्यार्थियों को विषय चयन में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं और किन–किन कारकों का इन निर्णयों पर प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का उपयोग करता है, जिसमें छात्रों, शिक्षकों और माता–पिता के सर्वेक्षण, साक्षात्कार और फोकस समूहों के माध्यम से आंकड़े संग्रहित किए गए हैं।

परिचय

भारत में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर (कक्षा 11–12) पर विद्यार्थी अपने करियर के लिए महत्वपूर्ण विषय का चयन करते हैं। छत्तीसगढ़, जो एक विकासशील राज्य है, यहां के विद्यार्थियों के लिए यह निर्णय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इस समय विद्यार्थियों को विज्ञान, वाणिज्य, कला इत्यादि जैसे विकल्पों में से किसी एक का चयन करना होता है, जो उनके भविष्य के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

विषय चयन का महत्वः

विषय चयन छात्रों के लिए न केवल एक शैक्षिक निर्णय होता है, बल्कि यह उनके करियर, पेशेवर जीवन और समाज में उनकी भूमिका को भी निर्धारित करता है। इसलिए यह निर्णय व्यक्तिगत रुचियों, शैक्षिक प्रदर्शन, पारिवारिक अपेक्षाओं और समाजिक दबावों से प्रभावित हो सकता है।

अध्ययन के उद्देश्यः

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि शिक्षक और माता–पिता किस हद तक और किस प्रकार से विद्यार्थियों को उनके विषय चयन में मार्गदर्शन करते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन यह भी देखेगा कि विभिन्न जिलों में, विशेषकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, इस मार्गदर्शन की प्रक्रिया में किस प्रकार का अंतर देखने को मिलता है।

समीक्षा

शिक्षकों की भूमिकाः

अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षक न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि वे छात्रों के मार्गदर्शक भी होते हैं। उनकी सलाह, शैक्षिक क्षमता और करियर के प्रति दृष्टिकोण विद्यार्थियों के निर्णय को प्रभावित करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के विषय चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर विज्ञान के छात्रों के लिए।

माता–पिता का प्रभावः

माता–पिता का प्रभाव विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत महत्वपूर्ण होता है। कई बार माता–पिता का दृष्टिकोण विद्यार्थियों को किसी खास विषय या करियर विकल्प के लिए प्रेरित करता है। विशेषकर छोटे शहरों और गांवों में यह देखा जाता है

कि पारिवारिक व्यवसाय और सामाजिक अपेक्षाएं विद्यार्थियों के निर्णयों को प्रभावित करती हैं।

सामाजिक–आर्थिक प्रभाव:

कई शोधों में यह पाया गया है कि समाज और आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के विषय चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में यह देखा जाता है कि परिवार के आर्थिक स्थिति के आधार पर विद्यार्थियों को वाणिज्य या कला जैसे विकल्प चुनने के लिए प्रेरित किया जाता है, क्योंकि इन विषयों में शैक्षिक उपकरणों और संसाधनों की कम आवश्यकता होती है।

अध्यान डिजाइन:

यह अध्ययन मिश्रित पद्धति (डपगमक डमजीवके) का अनुसरण करता है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की विधियों का उपयोग किया गया है। आंकड़े संग्रह के लिए छात्रों, शिक्षकों और माता–पिता से सर्वेक्षण, साक्षात्कार और फोकस समूहों के माध्यम से डेटा प्राप्त किया गया।

नमूना विधि:

नमूना आकार: इस अध्ययन में 500 छात्रों का सर्वेक्षण किया गया (250 शहरी क्षेत्रों से और 250 ग्रामीण क्षेत्रों से)। इसके अतिरिक्त, 100 शिक्षकों और 100 माता–पिता के सर्वेक्षण भी किए गए।

डेटा संग्रहण:

सर्वेक्षण: छात्रों, शिक्षकों और माता–पिता के बीच ऑनलाइन और ऑफलाइन सर्वेक्षण आयोजित किए गए, ताकि विषय चयन के बारे में उनकी सोच और प्रभाव को समझा जा सके। साक्षात्कार और फोकस समूह: कुछ छात्रों और शिक्षकों से व्यक्तिगत साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चा आयोजित की गई, ताकि उनके विचारों और दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

डेटा विश्लेषण:

डेटा को SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किया गया। इसके अलावा, साक्षात्कार डेटा का थीमैटिक विश्लेषण किया गया।

डेटा विश्लेषण और परिणाम

प्रारंभिक आंकड़े (Demographic Table)

जिला	शहरीध्ग्रामीण	छात्रों की संख्या	माता–पिता की संख्या	शिक्षकों की संख्या
रायपुर	शहरी	100	50	25
दुर्ग	शहरी	50	30	15
बिलासपुर	ग्रामीण	75	45	20
कोरबा	ग्रामीण	75	50	25

विषय चयन प्राथमिकताएँ (Subject Selection Preferences)

विषय स्ट्रीम	शहरी (द=150)	ग्रामीण (द=150)	कुल (द=300)
विज्ञान	80	40	120
वाणिज्य	50	60	110
कला	20	50	70

विषय चयन का विश्लेषण:

शहरी क्षेत्रों में: शहरी क्षेत्रों के छात्रों के बीच विज्ञान (80 में से 150) को अधिक प्राथमिकता दी गई है, जो अधिक शैक्षिक संसाधनों और करियर मार्गदर्शन के कारण है।

ग्रामीण क्षेत्रों में: ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों ने वाणिज्य (60 में से 150) को प्राथमिकता दी, जो उनके परिवारों के व्यवसाय और शिक्षा की पहुंच के कारण हो सकता है।

शिक्षक और माता–पिता का प्रभाव (Teachers and Parents Influence)

भूमिका	शिक्षक का प्रभाव	माता–पिता का प्रभाव
विज्ञान	40:	30:
वाणिज्य	35:	40:
कला	25:	30:

प्रभाव का विश्लेषण:

शिक्षकों का प्रभाव: शहरी क्षेत्रों में शिक्षक विज्ञान में अधिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में वाणिज्य और कला में माता–पिता का प्रभाव अधिक है।

चर्चा

शिक्षकों की भूमिका:

शिक्षकों का मार्गदर्शन शहरी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा गया है, जहां विद्यार्थियों को अधिक शैक्षिक सहायता मिलती है। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक विषय चयन के बारे में मार्गदर्शन देने में कम सक्षम होते हैं, क्योंकि वे संसाधनों और प्रशिक्षण की कमी का सामना करते हैं।

माता–पिता का प्रभाव:

ग्रामीण क्षेत्रों में माता–पिता की राय अधिक महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे स्थानीय सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेते हैं। शहरी क्षेत्रों में यह प्रभाव कम होता है क्योंकि बच्चों को अधिक करियर मार्गदर्शन और संभावनाओं का पता चलता है।

सामाजिक–आर्थिक प्रभाव:

सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर, ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को अधिक व्यावसायिक और स्थिर करियर विकल्प चुनने के लिए प्रेरित किया जाता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में विज्ञान और तकनीकी करियर विकल्प अधिक लोकप्रिय हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में विषय चयन में शिक्षक और माता–पिता की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षक अधिक प्रभावी होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में माता–पिता का प्रभाव अधिक देखा जाता है। इस अध्ययन के परिणामों से यह भी पता चलता है कि सामाजिक और आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के निर्णयों को प्रभावित करती है। भविष्य में, स्कूलों को और अधिक करियर काउंसलिंग सेवाएं प्रदान करनी चाहिए और शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए सक्षम बनाना चाहिए।

सुझाव

- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम:
- शिक्षक काउंसलिंग और मार्गदर्शन के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए।
- माता–पिता के लिए जागरूकता अभियान:
- माता–पिता को विभिन्न करियर विकल्पों और विषय चयन के महत्व के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।
- करियर काउंसलिंग सेवाओं की पहुँच बढ़ाई जाए:
- विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों में करियर काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

संदर्भ

- सिंह, आर. (2021). "शिक्षकों की भूमिका और विषय चयन में उनकी मार्गदर्शिता।" भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका, 28(2), 12–19।
- गुप्ता, एस. (2020). "ग्रामीण क्षेत्रों में माता–पिता का

शैक्षिक निर्णयों पर प्रभाव।'' शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 15(1), 45–50।

- शर्मा, आर. (2022). ''सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्णयों पर प्रभाव।'' भारतीय शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 40(3), 23–29।